CEDSI Times 15th July 2023



CEDSI TIMES

Your Skilling Partner...

भारत और श्रीलंका पशुपालन, डेयरी क्षेत्रों पर सहयोग करेंगे



भारत और श्रीलंका संयुक्त इरादे की घोषणा पर हस्ताक्षर के साथ पशुपालन और डेयरी के क्षेत्र में अपने सहयोग को मजबूत करने के लिए तैयार हैं। समझौते का उद्देश्य श्रीलंका में डेयरी उत्पादों की गुणवत्ता बढ़ाना, दूध उत्पादन में आत्मनिर्भरता हासिल करना और छोटे पैमाने के डेयरी किसानों की आय में सुधार करना है। कैबिनेट के सह-प्रवक्ता, मंत्री बंडुला गनवार्डेना ने सहयोग के संभावित लाभों पर जोर देते हुए कहा कि दुनिया के सबसे बड़े उत्पादकों और दूध के उपभोक्ताओं में से एक के रूप में भारत की स्थिति इसे ज्ञान साझा करने, तकनीकी सहायता और क्षमता निर्माण पहल के लिए एक मूल्यवान संसाधन के रूप में स्थापित करती है। . इन प्रयासों के माध्यम से, श्रीलंका का लक्ष्य अपने डेयरी उद्योग में उत्पादकता, दक्षता और गुणवत्ता मानकों में सुधार करना है।

प्रस्तावित घोषणा, जिसे मंत्रियों की कैबिनेट द्वारा अनुमोदित किया गया है, कृषि नवाचार और ग्रामीण विकास को बढ़ावा देने के लिए दोनों देशों की प्रतिबद्धता पर प्रकाश डालती है। महामारी के कारण ताजा दूध उत्पादन में गिरावट का सामना कर रहा श्रीलंका, पशुपालन और डेयरी में भारत की विशेषज्ञता और उन्नत प्रौद्योगिकियों का लाभ उठाना चाहता है।

सरकार घी, मक्खन जीएसटी में कटौती की मांग कर सकती है



सरकारी दस्तावेजों के अनुसार, भारत सरकार घी और मक्खन पर वस्तु एवं सेवा कर (जीएसटी) को मौजूदा 12% से घटाकर 5% करने के प्रस्ताव पर विचार कर रही है। इस कदम का उद्देश्य दूध की बढ़ती खुदरा कीमतों को संबोधित करना है, जो मवेशियों के लिए उच्च फ़ीड और चारे की लागत के कारण पिछले वर्ष में 10.1% और पिछले तीन वर्षों में 21.9% की वृद्धि हुई है।

पशुपालन और डेयरी विभाग ने वित्त मंत्रालय से इस प्रस्ताव को जीएसटी फिटमेंट कमेटी के एजेंडे में शामिल करने का आग्रह किया है। इसके बाद समिति इसे आगे के विचार के लिए संघीय अप्रत्यक्ष कर निकाय जीएसटी परिषद के समक्ष प्रस्तुत करेगी। घी पर मौजूदा 12% जीएसटी दर को उपभोक्ताओं और किसानों दोनों पर बोझ के रूप में देखा जाता है। भारत अपने खाद्य तेल की 70% खपत को पूरा करने के लिए आयात पर निर्भर है, जिस पर 5% कम जीएसटी दर पर कर लगाया जाता है।

इंडियन डेयरी एसोसिएशन के अध्यक्ष रूपिंदर सिंह सोढ़ी ने इस बात पर प्रकाश डाला कि घी पर 12% जीएसटी किसानों पर अतिरिक्त वित्तीय दबाव डालता है, क्योंकि एक किलोग्राम घी बनाने के लिए 12-14 लीटर दूध लगता है। सोढ़ी ने इस बात पर जोर दिया कि घी पर जीएसटी घटाकर 5% करने से उपभोक्ताओं और किसानों दोनों को फायदा होगा।

महिलाओं के लिए डेयरी सहकारी समिति अप्पुकोडु में खुली



मंत्री थंगराज ने पहाड़ियों में हरे चारे की प्रचुरता के कारण पशु पालन के लिए नीलगिरी क्षेत्र की उपयुक्तता पर प्रकाश डाला। उन्होंने राज्य के स्वामित्व वाली डेयरी सहकारी संस्था आविन द्वारा दूध की बढ़ती मांग पर जोर दिया और युवा पीढ़ी को पशुपालन में संलग्न होने के लिए प्रोत्साहित किया।

नव उद्घाटन सहकारी समिति से दूध उत्पादन में वृद्धि और आत्मनिर्भरता को बढ़ावा देकर स्थानीय डेयरी क्षेत्र के समग्र विकास में योगदान देने की उम्मीद है। इससे अप्पुकोडु गांव और आसपास के क्षेत्रों में महिलाओं की आय और आर्थिक कल्याण में सुधार करने में भी मदद मिलेगी।

दूध और डेयरी विकास मंत्री टी मनो थंगराज द्वारा ऊटी के इथलार पंचायत में स्थित अप्पुकोडु गांव में एक महिला प्राथमिक दूध उत्पादक सहकारी समिति का उद्घाटन किया गया। 22 लाख की लागत से बनी सहकारी समिति का लक्ष्य स्थानीय महिलाओं को पशुपालन गतिविधियों में सहायता करना है। उद्घाटन के दौरान मंत्री ने आठ महिला लाभार्थियों को जिला अग्रणी बैंक की ओर से 1.42 लाख का ऋण भी वितरित किया, जिससे वे गाय खरीदने में सक्षम हो गईं। CEDSI Times 15th July 2023

केरल सरकार गायों का दूध दुहना एक समान करेगी: मंत्री चिंचुरानी



उन्होंने कहा कि राज्य केंद्र सरकार की ऐसी और योजनाओं को बढ़ावा देने का इच्छुक है। केरल व्यापक रूप से चिकित्सा उपचार की आवश्यकता वाले जानवरों के लिए एम्बुलेंस के अलावा, मवेशियों के मुफ्त इलाज और गायों के कृत्रिम गर्भाधान जैसी सुविधाओं को लागू कर रहा है। श्रीमती चिंचुरानी ने कहा, "आम किसानों के लाभ के लिए प्राथमिक सहकारी समितियों को मजबूत होना चाहिए।" उन्होंने कहा कि केरल में गायें प्रतिदिन औसतन 10.3 लीटर दूध देती हैं, जो राज्य को देश में दूसरे स्थान पर रखती है। सांसद कोडिकुन्निल सुरेश ने सभा को संबोधित करते हुए कहा कि अधिकारी ऐसे किसी भी प्रयास की जांच करेंगे जो केरल में दूध किसानों को कमजोर करेगा।

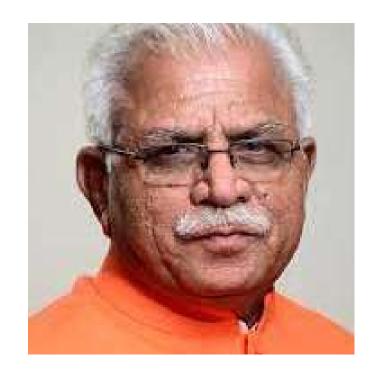
(TRCMPU), अलाप्पुझा जिले में नूरानाड के पास। 90 प्रतिशत सब्सिडी के साथ केंद्र सरकार की एक परियोजना के तहत परिकल्पित, थथमुन्ना में कार्यक्रम उच्च गुणवत्ता वाले दूध को सुनिश्चित करते हुए प्राथमिक दूध सहकारी समितियों को मजबूत करने के सरकार के प्रयासों का हिस्सा है। सरकार की योजना गायों के दूध निकालने के बीच 12 घंटे का अंतर सुनिश्चित करने की है। चिंचुरानी ने कहा, "यह राज्य की सभी सहकारी इकाइयों में थोक दूध कूलर स्थापित करके हासिल किया जा सकता है।"

पशुपालन और डेयरी विकास मंत्री सुश्री जे. चिंचुरानी ने कहा कि केरल सरकार राज्य भर में गायों के दूध देने के समय को एक समान करने के लिए कदम उठाएगी। उन्होंने मिल्मा के त्रिवेन्द्रम क्षेत्रीय सहकारी समिति के परिचालन क्षेत्र में 500 स्वचालित दूध संग्रह इकाइयों के वितरण का उद्घाटन करने के बाद कहा, ''अधिकारियों ने राज्य की दुग्ध सहकारी समितियों के सदस्यों के सहयोग से इस मोर्चे पर कदम उठाए हैं।'' दुग्ध उत्पादक संघ

चालू वित्तीय वर्ष के लिए राष्ट्रीय डेयरी विकास कार्यक्रम के तहत प्रशिक्षण कार्यक्रमों का उद्घाटन करने के बाद, श्री सुरेश ने कहा कि निचले स्तर के किसानों को केंद्र और राज्य दोनों सरकारों की डेयरी योजनाओं का सर्वोत्तम उपयोग करना चाहिए। एमएस। बैठक की अध्यक्षता एमआईए के अरुण कुमार ने की, जहां टीआरसीएमपीयू के संयोजक एन. भासुरंगन ने स्वागत भाषण दिया। टीआरसीएमपीसी के प्रबंध निदेशक डी.एस. कोंडा ने एक रिपोर्ट प्रस्तुत की, जबकि थाथमुन्ना डेयरी सहकारी समिति के अध्यक्ष बी. अशोक कुमार ने धन्यवाद प्रस्ताव रखा।

'किसानों को आय बढ़ाने के लिए वैकल्पिक साधन ढूंढने होंगे'

हरियाणा के मुख्यमंत्री मनोहर लाल खट्टर ने छोटे किसानों और ग्रामीण युवाओं को अपना उद्यम शुरू करने में सुविधा प्रदान करने के लिए राज्य सरकार द्वारा हाई-टेक और मिनी डेयरी योजनाओं के कार्यान्वयन की घोषणा की। इन योजनाओं का उद्देश्य दुग्ध उत्पादन बढ़ाना और स्वरोजगार के अवसर प्रदान करना है। मिनी डेयरी योजना के तहत 10 दुधारू पशुओं तक की मिनी डेयरी स्थापित करने पर पशुओं की लागत पर 25% सब्सिडी प्रदान की जाती है। इसके अतिरिक्त, दो या तीन दुधारू पशुओं के साथ डेयरी खोलने के लिए अनुसूचित जाति (एससी) के बीच रोजगार सृजन योजना के तहत 50% सब्सिडी की पेशकश की जाती है। 20 या अधिक दुधारू पशुओं के साथ हाई-टेक डेयरी स्थापित करने के लिए ब्याज छूट भी उपलब्ध है। सरकार ने इन योजनाओं के तहत अब तक 13,244 डेयरियां सफलतापूर्वक स्थापित की हैं।



मुख्यमंत्री खट्टर 'सीएम की विशेष चर्चा' कार्यक्रम के तहत मिनी और हाईटेक डेयरी मालिकों के साथ एक ऑडियो-कॉन्फ्रेंस में शामिल हुए। बातचीत के दौरान, उन्होंने ग्रामीण अर्थव्यवस्था को मजबूत करने और रोजगार के अवसर प्रदान करने में डेयरी मालिकों द्वारा निभाई गई महत्वपूर्ण भूमिका को स्वीकार किया। जैसे-जैसे भूमि जोत कम होती जा रही है, खट्टर ने किसानों के लिए आय के वैकल्पिक स्रोत तलाशने की आवश्यकता पर जोर दिया, जिसमें डेयरी एक व्यवहार्य विकल्प है।

हाल की भारी बारिश के कारण कई जिलों में फसल को हुए नुकसान को संबोधित करते हुए, खट्टर ने उपायुक्तों को अप्रभावित क्षेत्रों से हरा या सूखा चारा खरीदने और पशुपालकों को उपलब्ध कराने का निर्देश दिया। उन्होंने ग्रामीण अर्थव्यवस्था के विकास में पशुपालन की महत्वपूर्ण भूमिका को पहचानते हुए राज्य में पशुपालकों को व्यापक समर्थन का आश्वासन दिया।

मुख्यमंत्री ने डेयरी क्षेत्र में क्रांति लाने में सहकारी आंदोलन के महत्वपूर्ण योगदान पर प्रकाश डाला। अमूल की सफलता को ध्यान में रखते हुए, उन्होंने पूरे देश में इसकी उपलब्धता और हरियाणा में सहकारी दूध समितियों के नेटवर्क की उपस्थिति पर जोर दिया। CEDSI Times 15th July 2023

महाराष्ट्र ने गाय के दूध के लिए 34 रुपये प्रति लीटर खरीद मूल्य तय किया



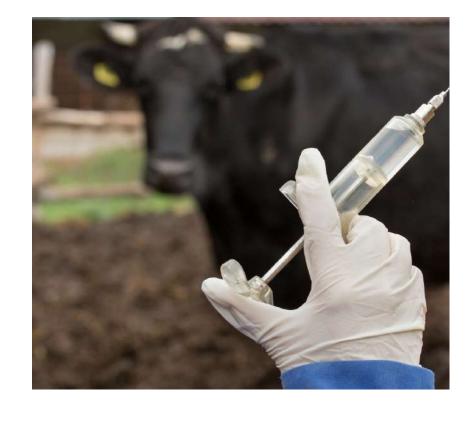
महाराष्ट्र सरकार ने गाय के दूध के लिए न्यूनतम खरीद मूल्य 34 रुपये प्रति लीटर निर्धारित किया है, जो सबसे कम दर है जो डेयरी फर्मों को दूध खरीदने के लिए किसानों को भुगतान करना होगा। यह दर पिछली दर लगभग 32 रुपये से मामूली वृद्धि है। सरकार की योजना हर तीन महीने में दरों की समीक्षा और संशोधन करने की है। हालाँकि, उपभोक्ताओं को चिंता है कि इससे दूध की कीमतों में समय-समय पर बढ़ोतरी हो सकती है।

न्यूनतम खरीद मूल्य निर्धारित करने का निर्णय मंत्री, दूध किसानों और चारा निर्माताओं के बीच चर्चा के बाद लिया गया। उनकी सिफारिशों के आधार पर संशोधित न्यूनतम खरीद मूल्य निर्धारित करने के लिए एक सिमित का गठन किया गया था। सिमित राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय बाजारों में दूध की कीमतों की निगरानी करेगी और हर तीन महीने में किसी भी आवश्यक खरीद दर समायोजन की सिफारिश करेगी, असाधारण परिस्थितियों में जल्द ही मूल्य संशोधन का सुझाव देने के विकल्प के साथ। स्थानीय डेयरी आयुक्तों और जिला डेयरी विकास अधिकारियों को मासिक कार्यान्वयन रिपोर्ट प्रदान करने का निर्देश दिया गया है।

कुछ दूध किसानों ने चारे की बढ़ती लागत और अन्य ओवरहेड्स के कारण 40 रुपये प्रति लीटर की खरीद मूल्य की अपील की थी। हालाँकि, प्रमुख निजी और सहकारी डेयिरयों का तर्क है कि खरीदारों के बीच कड़ी प्रतिस्पर्धा को देखते हुए, वे पहले से ही उचित कीमतें चुकाते हैं। उपभोक्ताओं द्वारा चिंता जताई गई है कि नए शासनादेश के कारण दूध उत्पादकों को खुदरा दूध की कीमतें बढ़ सकती हैं। कई परिवार पहले से ही बढ़ती खाद्य लागत और समग्र मुद्रास्फीति के बोझ से दबे हुए हैं। कुछ उपभोक्ताओं ने मध्यम वर्ग के सामने आने वाली समस्याओं के समाधान के लिए एक समिति की मांग की है। न्यूनतम खरीद मूल्य निर्धारित करने के कदम का उद्देश्य महाराष्ट्र में दूध किसानों के कल्याण का समर्थन करना है, जबिक खुदरा दूध की कीमतों पर असर देखा जाना बाकी है।

पशुपालन विभाग ने राज्य में मवेशियों के लिए गांठदार त्वचा रोग के खिलाफ टीकाकरण अभियान शुरू किया

महाराष्ट्र में पशुपालन विभाग ने राज्य में मवेशियों के लिए गांठदार त्वचा रोग (एलएसडी) के खिलाफ टीकाकरण अभियान शुरू किया है। एलएसडी के ताजा मामलों के जवाब में, विभाग ने कम से कम 75 लाख वैक्सीन खुराक का स्टॉक खरीदा है। पुणे जिले को हाल ही में इस वायरल संक्रमण के खिलाफ मवेशियों के टीकाकरण के लिए 6 लाख वैक्सीन खुराक का स्टॉक प्राप्त हुआ है। गांठदार त्वचा रोग एक संक्रामक वायरल संक्रमण है जो मुख्य रूप से मवेशियों को प्रभावित करता है, जिससे बुखार और त्वचा पर गांठें हो जाती हैं और मृत्यु हो सकती है। यह बीमारी पहली बार 2019 में ओडिशा में रिपोर्ट की गई थी और यह मुख्य रूप से मच्छरों और मक्खियों जैसे कीड़ों के काटने से जानवरों में फैलती है। जब संक्रमित जानवर स्वस्थ जानवरों के करीब होते हैं तो संक्रमण तेजी से फैल सकता है।



पशुपालन के संयुक्त आयुक्त शीतलकुमार मुकाने ने कहा कि सरकार का लक्ष्य इस वर्ष मवेशियों की आबादी में एलएसडी के कहर की पुनरावृत्ति को रोकना है। निवारक उपाय के रूप में एलएसडी के खिलाफ मवेशियों का टीकाकरण शुरू किया गया है। मई तक, महाराष्ट्र में एलएसडी के 3,450 नए मामले सामने आए हैं, जिनमें अकेले पुणे जिले में 27 संदिग्ध मामले हैं। 2023 में, पुणे जिले में हजारों मवेशियों में संक्रमण हुआ और बीमारी के कारण 1,400 मौतें हुईं। मुकेन ने इस बात पर जोर दिया कि मवेशियों में एलएसडी के प्रसार को रोकने के लिए टीकाकरण ही एकमात्र तरीका है। महाराष्ट्र में 1.39 करोड़ मवेशियों की आबादी के साथ, पशुपालन विभाग ने राज्य भर में वैक्सीन की 65 लाख से अधिक खुराक वितरित करने की योजना बनाई है। बीमारी के प्रकोप को रोकने के लिए संपूर्ण मवेशी आबादी का टीकाकरण करने का लक्ष्य है।

पशुपालन विभाग जैव सुरक्षा और स्वच्छता उपायों, जानवरों की आवाजाही पर नियंत्रण और जब भी आवश्यकता हो टीकाकरण को लागू करने के लिए पुणे नगर निगम, पिंपरी चिंचवाड़ नगर निगम और जिला परिषद सहित स्थानीय प्रशासन के साथ सहयोग कर रहा है। एलएसडी रोग प्रबंधन और रोकथाम के लिए दो दस्ते बनाए गए हैं और पशु मालिकों के लिए जागरूकता कार्यक्रम शुरू किए गए हैं।

15th July 2023 **CEDSI Times**

दूध उत्पादकता बढ़ाना: सीईडीएसआई के सहयोग से पशु आवास को अनुकूलित करने के लिए व्यावहारिक दृष्टिकोण

परिचय:

दूध उत्पादकता को प्रभावित करने वाले कारकों पर अपनी श्रृंखला जारी रखते हुए, हम अपना ध्यान पशु आवास पर केंद्रित करते हैं। पर्याप्त और किफायती आवास डेयरी पशुओं के स्वास्थ्य, कल्याण और उत्पादकता में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। भारत में डेयरी कौशल उत्कृष्टता केंद्र (सीईडीएसआई) अनुकूलित पशु आवास के महत्व को पहचानता है और इस संबंध में किसानों को अपना समर्थन प्रदान करता है। इस ब्लॉग में, हम पशु आवास के महत्व पर चर्चा करेंगे, भारत में वर्तमान परिदृश्य का पता लगाएंगे, व्यावहारिक दृष्टिकोण को बढ़ावा देने में सीईडीएसआई की भूमिका पर प्रकाश डालेंगे और किसानों के लिए इष्टतम पशु आवास बनाने के किफायती तरीकों पर चर्चा करेंगे।



पशु आवास और दूध उत्पादकता के बीच संबंध:

पशु आवास का डेयरी पशुओं के समग्र स्वास्थ्य और उत्पादकता पर सीधा प्रभाव पड़ता है। यह आश्रय प्रदान करता है, जानवरों को चरम मौसम की स्थिति से बचाता है, तनाव कम करता है और उचित चारा सेवन की सुविधा प्रदान करता है। इष्टतम आवास स्थितियाँ दूध उत्पादकता पर सकारात्मक प्रभाव डालती हैं, जिससे दूध की पैदावार अधिक होती है।

भारत में वर्तमान परिदृश्य और इसका प्रभाव:

पशुधन जनगणना 2019 के अनुसार, भारत में केवल लगभग 35% किसानों के पास अपने मवेशियों के लिए उचित पशु आवास है। इसका मतलब यह है कि बड़ी संख्या में डेयरी पशुओं को अभी भी पारंपरिक या अस्थायी संरचनाओं में रखा जाता है, जो उनकी भलाई और दूध उत्पादकता में बाधा बन सकता है। अपर्याप्त पशु आवास दूध उत्पादकता को कई तरह से नकारात्मक रूप से प्रभावित करता है। खराब वेंटिलेशन और इन्सुलेशन के कारण गर्मी का तनाव बढ़ जाता है, जिससे भोजन का सेवन और दूध उत्पादन कम हो सकता है। अनुचित फर्श चोट और लंगड़ापन का कारण बन सकता है, जिससे गायों की गतिशीलता और दूध की पैदावार प्रभावित हो सकती है। अत्यधिक भीड़ और जगह की कमी जानवरों के आराम को सीमित कर देती है, जिससे उनकी आराम करने और कुशलता से सोचने की क्षमता में बाधा आती है।

व्यावहारिक दृष्टिकोण को बढ़ावा देने में सीईडीएसआई की भूमिका:

सीईडीएसआई पशु आवास में व्यावहारिक और किफायती समाधान की आवश्यकता को पहचानता है। अपने प्रशिक्षण कार्यक्रमों के माध्यम से, सीईडीएसआई किसानों को उनके पशुधन के लिए इष्टतम आवास बनाने के लिए लागत प्रभावी तरीकों पर शिक्षित करता है।

शेड डिजाइन: सीईडीएसआई बांस, छप्पर या कम लागत वाली छत शीट जैसी स्थानीय रूप से उपलब्ध सामग्रियों का उपयोग करके पशु शेड डिजाइन करने पर मार्गदर्शन प्रदान करता है। ये डिज़ाइन जानवरों के लिए आरामदायक वातावरण सुनिश्चित करते हुए वेंटिलेशन, प्रकाश व्यवस्था और स्थान आवंटन को प्राथमिकता देते हैं।









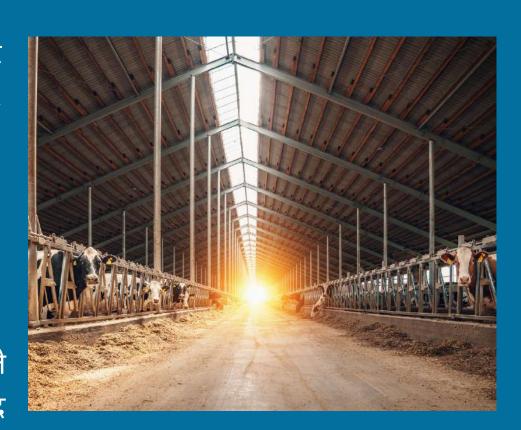


15th July 2023 **CEDSI Times**

फर्श: सीईडीएसआई आरामदायक फर्श सामग्री के महत्व पर जोर देता है, जिसे रेत बिस्तर या रबर मैट जैसे विकल्पों के माध्यम से प्राप्त किया जा सकता है। ये किफायती विकल्प कुशनिंग प्रदान करते हैं, चोटों और लंगड़ापन के जोखिम को कम करते हैं।

वेंटिलेशन: रिज वेंट, खिड़कियां या कम लागत वाले निकास पंखे स्थापित करने जैसी सरल तकनीकें हवा के संचलन को बेहतर बनाने और शेड के अंदर तापमान को नियंत्रित करने में मदद करती हैं। प्राकृतिक वेंटिलेशन के तरीके, जैसे खिड़िकयों की उचित स्थिति, गर्मी के तनाव को प्रभावी ढंग से कम कर सकते हैं।

अपशिष्ट प्रबंधन: सीईडीएसआई किसानों को खाद बनाने जैसे अपशिष्ट प्रबंधन के कम लागत वाले तरीकों के बारे में शिक्षित करता है, जो स्वच्छता बनाए रखने और बीमारियों के प्रसार को रोकने में मदद करता है।





किसानों के लिए सर्वोत्तम पशु आवास बनाने के किफायती तरीके:

किसान स्थानीय स्तर पर उपलब्ध संसाधनों का उपयोग करके इष्टतम पशु आवास बनाने के लिए किफायती दृष्टिकोण अपना सकते हैं:

स्थानीय सामग्रियों का उपयोग: पशु शेड के निर्माण के लिए किसान स्थानीय रूप से उपलब्ध सामग्रियों जैसे बांस, लकड़ी या पुनर्नवीनीकरण सामग्री का लाभ उठा सकते हैं। ये सामग्रियां लागत प्रभावी और पर्यावरण के अनुकूल हैं।

इन्सुलेशन में सुधार: चरम मौसम की स्थिति के दौरान अनुकूल तापमान बनाए रखने के लिए किसान पुआल या स्थानीय रूप से उपलब्ध सामग्रियों का उपयोग करके पशु शेडों को इन्सुलेशन कर सकते हैं।

प्राकृतिक प्रकाश और वेंटिलेशन: खिड़कियों और खुले वेंट का रणनीतिक स्थान प्राकृतिक प्रकाश और वायु प्रवाह को अधिकतम कर सकता है, जिससे कृत्रिम प्रकाश और वेंटिलेशन सिस्टम की आवश्यकता कम हो जाती है।

कुशल स्थान उपयोग: स्थान के उपयोग को अनुकूलित करने के लिए पशु आवास लेआउट को डिजाइन करना यह सुनिश्चित करता है कि प्रत्येक जानवर के पास आराम से चलने और आराम करने के लिए पर्याप्त जगह हो।

रणनीतिक जल निकासी प्रणालियाँ: पशु आवास क्षेत्र के भीतर उचित जल निकासी व्यवस्था लागू करने से जलभराव को रोका जाता है, स्वच्छता में सुधार होता है और बीमारियों का खतरा कम होता है।

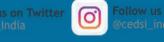
किफायती और व्यावहारिक दृष्टिकोण को बढ़ावा देने में सीईडीएसआई का समर्थन किसानों को अपने बजटीय बाधाओं के भीतर पशु आवास को अनुकूलित करने का अधिकार देता है, जिससे दूध उत्पादकता में सुधार होता है।

निष्कर्ष:

व्यावहारिक और किफायती दृष्टिकोण के माध्यम से इष्टतम पशु आवास बनाने में किसानों का समर्थन करने की सीईडीएसआई की प्रतिबद्धता दूध उत्पादकता बढ़ाने के लिए महत्वपूर्ण है। किसानों को लागत प्रभावी तकनीकों पर शिक्षित करके, स्थानीय रूप से उपलब्ध संसाधनों का लाभ उठाकर और उचित आवास के महत्व पर जोर देकर, सीईडीएसआई किसानों को अपने मवेशियों के लिए एक आरामदायक वातावरण प्रदान करने में सक्षम बनाता है। बेहतर पशु आवास के साथ, किसान अधिक दूध की पैदावार, बेहतर पशु कल्याण और समग्र रूप से टिकाऊ डेयरी फार्मिंग प्रथाओं की उम्मीद कर सकते हैं।









15th July 2023 **CEDSI Times**

सीईडीएसआई द्वारा राजस्थान में प्राथमिक दुग्ध उत्पादकों के लिए कौशल प्रशिक्षण कार्यक्रम!

सीईडीएसआई राजस्थान में प्राथमिक दूध उत्पादकों को सशक्त बनाने के उद्देश्य से एक विशेष कौशल प्रशिक्षण कार्यक्रम की घोषणा करते हुए रोमांचित है। संबद्ध डेयरी और दूध उत्पादक संघों के पास अपने सदस्यों को संपूर्ण डेयरी खेती और पशुपालन प्रथाओं को कवर करने वाला व्यापक 3-दिवसीय प्रशिक्षण प्रदान करने का एक अनूठा अवसर है। कार्यक्रम में मवेशियों की नस्ल, चारा प्रबंधन, पशु स्वास्थ्य, प्रजनन, दूध की गुणवत्ता और फार्म प्रबंधन जैसे आवश्यक विषयों को शामिल किया जाएगा। प्रतिभागियों को अपने डेयरी संचालन को बढ़ाने के लिए गहन ज्ञान और व्यावहारिक कौशल प्राप्त होंगे।

इसके अलावा, दूध उत्पादकों का मूल्यांकन किया जाएगा और कार्यक्रम के सफल समापन पर उन्हें औपचारिक प्रमाणन प्राप्त होगा। यह प्रमाणीकरण एक मान्यता प्राप्त प्रमाण पत्र के रूप में काम करेगा, जिससे उन्हें अपने डेयरी व्यवसाय का विस्तार करने और हितधारकों के बीच विश्वास बनाने में सहायता मिलेगी।

सीईडीएसआई कार्यक्रम का खर्च वहन करेगा, जबकि संबद्ध डेयरी या निर्माता संघ प्रशिक्षण स्थल, प्रतिभागियों और प्रशिक्षण सहायता की व्यवस्था करेंगे। प्रत्येक बैच अधिकतम 25-30 किसानों को समायोजित कर सकता है, जिससे व्यक्तिगत ध्यान और केंद्रित शिक्षा सुनिश्चित होती है। बड़ी संख्या में दूध उत्पादकों की जरूरतों को पूरा करने के लिए दो बैचों का आयोजन किया जा सकता है। यदि आपका डेयरी या उत्पादक संघ इस कौशल प्रशिक्षण कार्यक्रम के माध्यम से अपने संबद्ध दूध उत्पादकों के उत्थान और सशक्तिकरण में रुचि रखता है, तो इस अवसर को न चूकें!



Centre of Excellence for Dairy Skills in India

Join Our Membership Drive and Get Benefits of

- Platform to interact with other members in the sector
 - Networking opportunities with corporate leaders and government authorities
- Special costs of training in Skill **India Certified Programmes**
- Access to our Journal and **Publications**
- Expert advice in day-to-day operations and management of livestock /farm productions
- Free registration on the job portal and regular updates on job vacancies in the sector

- Recognize your organization with **CEDSI Yearly Awards and Recognition**
- Chance to reach across the board through advertising in our press releases, news and articles
- Consultative and advisory services to help members
- Consulting and advisory services to help members
- Periodic e-newsletter for the latest news, govt. announcement and schemes in dairy sectors
- Updates on training programs of CEDSI and access to the training calendar

Who Can Become a Member -









www.cedsi.in

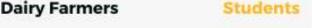


Professional

हम कौन हैं?

कौशल विकास और उद्यमिता मंत्रालय के तहत भारतीय कृषि कौशल परिषद (ASCI) के तत्वावधान में काम करने वाली एक स्वायत्त संस्था "भारत में डेयरी कौशल के लिए उत्कृष्टता केंद्र की आजीविका (CEDSI)", किसानों सशक्तिकरण और बेहतरी में मदद करने के लिए. वेतनभोगी कर्मचारी, और डेयरी मूल्य श्रृंखला में अन्य हितधारक।

सीईडीएसआई सदस्यता उद्योग के नेताओं. नीति निर्माताओं, विकास चिकित्सकों, डेयरी वैज्ञानिकों, शोधकर्ताओं, छात्रों और किसानों को डेयरी उद्योग के लिए आसन्न महत्व के मुद्दों पर बहस और चर्चा करने के लिए एक अनूठा मंच प्रदान करेगी।

















CEDSI : रविविंग स्किल्स एंड जनरेटिंग लाइवलीहुड

किसानों/छात्रों/उद्यमियों के लिए कौशल प्रशिक्षण कार्यक्रम

- डेयरी किसान / उद्यमी
- डेयरी फार्म पर्यवेक्षक
- डेयरी कार्यकर्ता
- पशु स्वास्थ्य कार्यकर्ता
- कृत्रिम गभिधान तकनीशियन
- पशु चिकित्सा क्षेत्र सहायक
- पशु चिकित्सा नैदानिक सहायक

- बछड़ा पालन
- कृषि उपकरण तकनीशियन
- डेयरी फार्म अर्थशास्त्र और प्रबंधन
- उद्योग संरेखित प्रमाणन कार्यक्रम (बेरोजगार युवा और छात्र)

एफपीओ उन्मुख प्रशिक्षण कार्यक्रम

- उत्पाद प्रौद्योगिकी और प्रक्रियाओं पर एफपीओ सदस्य अभिविन्यास।
- एफपीओ मार्केट लिंकेज
- एफपीओ शासन
- एफपीओ लेखा

डेयरी कॉरपोरेट्स और सहकारी समितियों के लिए प्रमुख कौशल प्रशिक्षण कार्यक्रम

- चिलिंग प्लांट तकनीशियन
- बल्क मिल्क कूलर ऑपरेटर
- ग्राम स्तरीय दुग्ध संग्रह केन्द्र पर्यवेक्षक
- दूध परीक्षक
- ग्रीन हाउस गैसों का शमन
- दूध की गुणवत्ता आश्वासन
- मिल्क डिलीवरी बॉय

- दूध खरीद और इनपुट पर्यवेक्षक
- डेयरी उद्योग में अपशिष्ट प्रबंधन
- चारा और चारा प्रबंधन
- स्वच्छ दूध उत्पादन
- निर्णय समर्थन प्रणाली / डेटा विश्लेषिकी